प्रयोजनमूलक हिंदी :
विविध आयाम

संपादक
प्रा.डॉ.भिमराव मानकरे
प्रा.डॉ.प्रकाश सुर्यवंशी

प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध आयाम
प्रयोजनमूलकी हिंदी की उपयोगीता

- **पूर्ण अधिकार :**
  प्राचार्य,
  स्वातंत्र्य सैनिक सूर्यभानजी पवार महाविद्यालय, पूर्णा (जं.) जि.परभणी
- **आयोजक**
  हिंदी विभाग,
  स्वातंत्र्य सैनिक सूर्यभानजी पवार महाविद्यालय, पूर्णा (जं.) जि.परभणी तथा
  स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

- **संपादक मंडळ**
  प्रा.डॉ. भीमराव मानकरे प्रा.डॉ. प्रकाश सूर्यवंशी प्राचार्य डॉ. शारदा बंडे

- **प्रकाशक**
  प्राचार्य, स्वातंत्र्य सैनिक सूर्यभानजी पवार महाविद्यालय, पूर्णा (जं.) जि.परभणी

- **प्रकाशन तिथी :**
  २८ फरवरी २०१७

- **मुद्रण :**
  अक्षदा सर्व्हीसेस, परभणी

- **मूल्य** : २००/-

- ISBN : 978-81-921456-8-6

इस अंक में व्यक्त किये गये विचारोंसे संपादक, प्रकाशक सहमत होगा ऐसा नही ।
राज्यस्तरीय हिंदी भाषा कृतीसत्र में संशोधित लेखकोंकी संपादीत पुस्तिका प्रकाशन के पुरे
अधिकार प्राचार्य, स्वातंत्र्य सैनिक सूर्यभानजी पवार महाविद्यालय, पूर्णा (जं.) इनके तरफ है।

* अनुक्रमणिका *

क्र.	शिर्षक	लेखक	पा.क्र.
१	बीज भाषण	डॉ. अंबादास देशमुख	९
२	प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप	प्रा. डॉ. संजय जाधव,	१७
३	रेडियों माध्यम और हिंदी विज्ञापन	प्रा. डॉ. वसंत पुंजाजीराव गाडे	२४
४	प्रयोजनमूलक हिन्दी : विविध आयाम	प्रा.डॉ. सुजितसिंह शि. परिहार	२७
५	प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप	प्रा.डॉ.जयंत बोबडे	३०
६	प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप	डॉ.दयानंद शास्त्री	३५
७	प्रयोजनमूलक हिंदी : विशेषताएँ	प्रा.डा . शेवाळे हनुमंत दत्तु	३७
८	राष्ट्रभाषा - स्वरूप एवं अवधारणा	प्रा. डॉ. सुभाष नागोराव क्षीरसागर	४०
९	"प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप और व्यवस्था"	प्रा. डॉ. शे. रज़िया शहेनाज़ शे. अब्दुला	४३
१०	प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्ति के विभिन्न क्षेत्र	डॉ. कावळे रेविता बलभीम	४५
११	प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद प्रक्रिया	प्रा. डॉ. गाडे ज्ञानेश्वर गंगाधरराव	५०
१२	अनुवाद : स्वरुप एवम् प्रकार	प्रा.डॉ.देशपांडे व्ही.व्ही	५३
१३	अनुवाद की प्रक्रिया	डॉ. संजय गडपायले	५६
१४	प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रयुक्ति के विविध आयाम	डॉ. अशोक तुकाराम जाधव	५९
१५	पारिभाषिक शब्द-स्वरूप और निर्माण के सिध्दांत	प्रा.डॉ. शिवाजी वैद्य	६१
१६	प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता/उपयोगिता	डॉ.गिरि डी.व्ही.	६४
१७	प्रयोजनमूलक हिंदी	प्रा.खंदकुरे व्यंकट अमृतराव	६७
१८	प्रयोजनमूलक हिन्दी की विशेषताएँ	श्रीमंडळे वैशाली शिवाजी	६९
१९	प्रयोजन मूलक हिंदी के विविध रूप	डॉ. मोहन एम. डमरे	७२
२०	प्रयोजनमूलक हिंदी: स्वरूप एवं उपयोगिता	प्रा.व्ही.एम. देशमुख	७५
२१	प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रुप	डॉ. रत्नमाला धुळे(वानखेडे)	७७
२२	विज्ञापन और हिन्दी	डॉ. संगिता लोमटे	८०
२३	प्रयोजनमूलक हिंदी : क्षेत्र और प्रयुक्तियाँ	डॉ. अमृत एल. बाळुवाले	८२
२४	राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में प्रयोजनमूलक हिंदी की भूमिका	डॉ.एमेकर एन.जी.	८५
२५	प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रासंगिकता	डॉ.विठ्ठल शंकर नाईक	८७
२६	प्रयोजनमूलक हिंदी : विशेषताएँ	प्रा. संग्राम सोपानराव गायकवाड	९०
२७	अनुवाद : परिभाषा एवं प्रकार	पुष्पलता काळे	९२
२८	प्रौद्योगिक एवं प्रयोजनमूलक हिंदी	प्रा.शेख परवीन बेगम शेख इब्राहीम	९५
२९	प्रयोजनमूलक हिंन्दी : प्रयुक्ति के माध्यम राजभाषा	प्रा. अर्चना बंग / सोमाणी	९९
३०	प्रयोजनमूलक हिंदी और रोजगार	प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार	१०३

प्रयोजनमूलक हिंदी और रोजगार

प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार

देगलूर महाविद्यायल,देगलूर

जागतिकीकरण निजीकरण एवं बाजारीकरण के इस युग में प्रयोजनमूल हिन्दी का महत्व दिन - प्रती - दिन बढ रहा हैं | इसलिए भाषा के साहित्यिक पक्ष के साथ - साथ प्रयोजन मूलक हिन्दी सीखने और सीखाने की आवश्यकता हैं | भाषा का व्यावहारिक पक्ष जितना मजबूत होगा भाषा उतनीही प्रगत और सशक्त होगी. बढती आबादी और बेरोजगार के दौर में वही भाषा सशक्त होगी जो रोजगार देने में सक्षम होगी | प्रयोजनमूलक हिन्दी कें नीत - नए आयाम विकसीत हो रहे है परिणाम स्वरुप रोजगार की सभावनाए भी बढ गई हैं | अनुवाद, पत्रकारीता, जनसंचार माध्यम, मीडिया, फीचर लेखन, पटकथा लेखन, विज्ञापन, समाचार लेखन आदि क्षेत्र में रोजगार विपुल मात्रा में प्राप्त हो रहे हैं |

वर्तमान युग प्रतियोगीता एवं बाजारीकरण का है जिस कारण विज्ञापन आज बाजार का प्राणतत्व बन गया हैं | राष्ट्रीय एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पाद के प्रभावी क्रय के लिए एवं अपने वस्तु के विज्ञापन के लिए आम बोलचाल की भाषा हिन्दी को अपना रहे हैं | विज्ञापन लेखन एवं विज्ञापन क्षेत्र में हिन्दी भाषा का महत्व एवं उपयोगीता बढ रही हैं | विज्ञापन के क्षेत्र में दूरदर्शन, रेडियो तथा समाचारपत्र इन तीनों माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका हैं | आज के उपभोगतावादी परिवेश में विज्ञापन जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है | विश्व की समस्त व्यवस्था में एक शक्तिमान अस्त्र के रुप में विज्ञापन का प्रयोग सर्वत्र किया जा रहा है | विज्ञापन का विशेष संचार माध्यम है व्यापार और वाणिज्य यह प्रभावी एवं अभिन्न अंग है | बाजारीकरण, निजीकरण , जागतिकीकरण एवं तत्रज्ञान के कारण विश्वस्तर से लेकर स्थानिय स्तर तक यातायात, राजनीति, व्यापार, मनोरंजन, बँक, बीमा, निर्माण, सेवा प्रशासन आदि क्षेत्र से लेकर मनुष्य जीवन तक विज्ञापन की व्याप्ती है | विज्ञापन के इस व्याप्ती के कारण विज्ञापन एक स्वतंत्र व्यापार का क्षेत्र बन गया हैं | विज्ञापन निर्माण में छोटी - बडी अनेक ॲड-एजन्सीयॉ कार्य कर रही हैं |

हिन्दी में तो विज्ञापन नें आसमान की ऊँचाई को प्राप्त कर लिया है | संगीत, चित्र, अभिनय आदि के साथ संवाद लेखन अंत्यंत महत्वपुर्ण हैं | सभी जनसंचार माध्यमों में विज्ञापन छाया हुआ है | विज्ञापन निर्माण में भारत में बी दत्ता राम अँड कंपनी, लिटास, ओ.बी.एस, सिट्रा, एच.टि.ए., वलेरियन आदि विज्ञापन एजन्सीयाँ कार्य कर रही है हिन्दी विज्ञापन में रोजगार की अनेकों संभावनाएँ निर्माण हुई है |

जनसंचार माध्यमों मे भी रोजगार विपुल मात्रा में बढ गए हैं | समाचारपत्र, श्राव्यमाध्यम, दृकश्राव्य माध्यम, पोस्टर, बॅनर आदि माध्यम रोजगार के केंद्र बन गए है | स्थानिक स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक इस क्षेत्र में रोजगार प्राप्त हो रहे हैं | समाचारपत्र, पोस्टर, बॅनर, होल्डींग्स के माध्यमसे स्थानीय रोजगार में वृध्दी हुई हैं | संगणक एवं तंत्रज्ञान ने इस क्षेत्र में क्रांती लाई हैं | जिस कारण आज स्थानिक स्तरों पर अनेकों समाचार पत्र छापे जा रहे हैं | स्थानीय पत्रकरीता, मुद्रण व्यवसाय, संगणक तंत्रज्ञान, आदि सह व्यवसायों में भी रोजगार निर्माण हो रहा हैं |

जनसंचार माध्यमों में समाचार पत्र विश्व के सभी विषयों से जुडा महत्वपूर्ण एवं प्रभावी माध्यम हैं | समाचार पत्र , पत्रकारीता, सेवा , मुद्रण, विज्ञापन , प्रुफरिडिंग, ड्रप्टिंग, वितरण आदि का मिलाजुला रुप हैं | जिसकारण रोजगार की अनेको संभावनाएँ निर्माण हो रही हैं | क्रिडा, कृषि, साहित्य, फिल्म, शिक्षा, व्यापार, विज्ञान, ज्योतिष, मनोरंजन, राजनीति और संचार माध्यम में आदि क्षेत्रो में हिन्दी अग्रेसर है |

देश में हिन्दी भाषा में जितनी पत्र - पत्रिकाएँ एवं अखबार निकलते है उतने किसी अन्य भाषा में नहीं | हिन्दी भाषा पर अधिकार एवं रुची रखने वाले, छात्रों के रोजगार के लिए पत्रकारीता एक अच्छा क्षेत्र हैं | ज्ञान - विज्ञान, तंत्रज्ञान, दर्शन, समाज, संस्कृती, साहित्य, कला, राजनीति, धर्म, अर्थनीति, व्यापार, संघर्ष, क्रांन्ति , नवनिर्माण, सेवा , विज्ञान,आंतरिक्ष आदि अनेको विषयों को प्रतिबिंबीत करनेवाला माध्यम पत्रकारिता हैं | वर्तमान में केवल समाचार पत्र के साथ - साथ हिन्दी रेडिओ पत्रकारिता, इंटरनेट पत्रकारिता, दूरदर्शन पत्रकारिता, आदि क्षेत्रों में भी रोजगार निर्माण हो रहे हैं | इंटरनेट पत्रकारिता ने नए युग को जन्म दिया हैं | हिन्दी समाचार वेबसाईट के कारण हिन्दी पत्रकारिता ने अपनी करवटे बदली हैं | वेब दुनिया समाचार पोर्टल नें हिंदी पत्रकारिता को नई दिशा एवं ऊँचाइया प्रदान की हैं | आज वर्ल्ड वाइड वेब पर दैनिक जागरन, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, लोकसत्ता, दैनिक लोकमत, मातृभूमि, हिन्दुस्तान टाईम्स आदि अनेको समाचार पत्र अपनी भूमिका निभा रहे हैं |

आधुनिक तंत्रज्ञान ने नई पत्रकारिता को जन्म दिया हैं | पत्रकारिता ने वर्तमान में अपना जाल रेडियो, टेलिविजन, भ्रमणध्वनी यंत्र, न्युज चैनलों, पत्र - पत्रिकाओं, वेबसाईडों, वीडियो मॅग्जीनों, रिर्पोताज, फिचर, खोज, फोटो, काईन, ग्राफिक्स, साक्षात्कार, आंतरिक्ष, स्टिंग आदि विभिन्न क्षेत्रों में कहाँ - कँहा तक फैला हैं |

दृक, एवं दृकश्राव्य जनसंचार माध्यमों मे भी रोजगार के नीत - नए अवसर जन्म ले रहे है | रेडियो पत्रकारिता के साथ - साथ विभिन्न कार्यक्रमों का प्रसाराण हो रहा हैं | हिन्दी भाषा विद, जानकार, एवं वक्ताओं की माँग बढ रही हैं | दूरदर्शन तो आज रोजगार प्रमुख केन्द्र बन गया हैं | दृक श्राव्य माध्यमों पर सेंकडो चॅनल्स है जो अनेको क्षेत्रों से जुडे रहकर, एवं प्रभावित होकर हिन्दी के अनेको कार्यक्रमों को प्रसारित करते हैं | समाचार प्रसारण, विविध खेलो का हिन्दी में सीधा प्रसारण, मनोरंजन, साक्षात्कार, निवेदन, नाटय तथा धारावाहिक प्रस्तुतीकरण, समाचार लेखन, विज्ञापन लेखन, अनुवाद लेखन, पटकथा लेखन, संवाद लेखन, संशोधन, विज्ञान, भुगोल, अंतरिक्ष, निर्माण, सुरक्षा आदि अनेकों घटक महत्वपूर्ण हैं जिससे जुडे अनेको कार्यक्रम हैं | जिनके पास हिन्दी भाषा का ज्ञान, अभिनय, भाषिक कौशल्य, अभिव्यक्ती की प्रभावी शैली, वाचन कौशल्य, वकृत्व गुण है उनकी नौकरियाँ राह देख रही हैं |

फीचर समाचार पत्र की आधुनातम लेखन विद्या हैं फीचर के बिना समाचार - पत्र निष्प्राण हो जाता है | फीचर से समाचार पत्र को विशिष्टता मिलीती है | और हिंदी पत्रकारिता में फिचर लेखन व्दारा रोजगार प्राप्त होता है | समाचार पत्र मानव की रुचि को मनोरंजनात्मक सामग्री के साथ सचित्र रुप में प्रकाशित करके सामान्य जनता तक पँहुचाता है | फीचर किसी घटना, व्यक्ति, वस्तु स्थान के बारे में लिखा गया लेख है |

यह लिखते समय कल्पनाशीलता, मनोरंजनात्मक प्रभावात्मकता और आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया जाता है | फीचर लेखन के लिए नियमित अध्ययन समृध शब्द भंडार, आकर्षक प्रस्तुती जरुरी है | प्रभावी फीचर के लिए निरंतर अध्ययन, संदर्भ ग्रंथों का संकलन हमेश करना चाहिए | साथ ही समृध्द शब्द भंडार होना चाहिए इससे लेखन में सरलता सहजता आती है | आकर्षक प्रस्तुति, सार्थक चित्र, समाज के महत्वपुर्ण लोगों के साक्षात्कार एक सफल फीचर निर्मिती में साहाय्यक होते है | दिन-प्रतिदिन -पत्रों सूचना विभागों तथा रेडियों और दुरदर्शन केन्द्र में अच्छे फीचर लेखको की निरन्तर बढती हुई माँग फिचर की महत्ता और महिमा को रेखांकित करती हैं | और इससे कई हिंदी विद्वतजनो को पत्रकारीता, रेडियों, दुरदर्शन में अच्छा रोजगार प्राप्त हो सकता है |

पटकथा लेखन करते समय मूल कथा को संक्षिप्त करके अलग अलग मुद्दो में लिखा जाता है | और बादमें कथा को विकसित करके उसे चित्रित किया जाता है | पटकथा मे फिल्म से जुडे कैमरा ध्वनी, अभनय, संवाद आदि को महत्वपुर्ण निर्देश दिये होते है | पटकथा लेखक का शब्द भांडार समृध्द होना अनिवार्य होता है | पटकथा कीसी भी घटना या दृश्य पर लिखि जाती है | पटकथा के लिए सबसे महत्व पुर्ण नाटकीयता होती है | नाटकीयतासे कथावस्तु को

पटकथा के शिल्प में डालना पडता है जिससे पटकथा आकर्षक होती है, और उसे को गति आति है | आकर्षक पटकथा ही सफल होती है और उस पटकथा को कई फिल्म निर्माता खरीदना चाहते है | और इसी से तो आज कई हिंदी छात्र घर बैठकर पटकथा लेखन करके रोजगार प्राप्त कर सकते है |

फिल्म की पटकथा लिखते समय स्थल काल अनुसार पात्रों का परिचय आवश्यक है तद्उपरांत दो विरुध्द विचार,घटना में किसी बात पर संघर्ष करते कथानक को आगे बढना चाहिए इस के उपरांत फिल्म की कथा को चरम अवस्था में लाकर सामने वाले को आनंद देना चाहिए | फिल्म की पटकथा लिखते समय शुरुवात और अंत महत्वपुर्ण होते है | क्योंकि इन दोनो के बिच ही पूरी कथा घूमती रहती है अगर दोनों में मेल जोल नहीं तो वह पटकथा व्दारा निर्मित फिल्म सफल नहीं हो सकती वर्तमान मे विश्व की हर भाषाओं में, हर क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता बढ रही है | कला, धर्म, साहित्य, दर्शन, शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान,तकनीक, वाणिज्य, राजनीति, व्यापार, समाजशास्त्र आदि अनेको शाखाओं मे होनेवाले कार्य, संशोधन एवं गतिविधीयाँ एक राष्ट्र से दुसरे राष्ट्र में, एक संस्कृति से दुसरे संस्कृति मे पहूचाने का कार्य अनुवाद के व्दारा हो रहा है | आज अनुवाद समाज के प्रत्येक घटक की आवश्यकता बन गया है | यह लिखते समय कल्पनाशीलता, मनोरंजनात्मक प्रभावात्मकता और आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया जाता है | फीचर लेखन के लिए नियमित अध्ययन समृध शब्द भंडार, आकर्षक प्रस्तुती जरुरी है | प्रभावी फीचर के लिए निरंतर अध्ययन, संदर्भ ग्रंथों का संकलन हमेश करना चाहिए | साथ ही समृध्द शब्द भंडार होना चाहिए इससे लेखन में सरलता सहजता आती है | आकर्षक प्रस्तुति, सार्थक चित्र, समाज के महत्वपुर्ण लोगों के साक्षात्कार एक सफल फीचर निर्मिती में साहाय्यक होते है | दिन-प्रतिदिन -पत्रों सूचना विभागों तथा रेडियों और दुरदर्शन केन्द्र में अच्छे फीचर लेखको की निरन्तर बढती हुई माँग फिचर की महत्ता और महिमा को रेखांकित करती हैं | और इससे कई हिंदी विद्वतजनो को पत्रकारीता, रेडियों, दुरदर्शन में अच्छा रोजगार प्राप्त हो सकता है |

पटकथा लेखन करते समय मूल कथा को संक्षिप्त करके अलग अलग मुद्दो में लिखा जाता है | और बादमें कथा को विकसित करके उसे चित्रित किया जाता है | पटकथा मे फिल्म से जुडे कैमरा ध्वनी, अभनय, संवाद आदि को महत्वपुर्ण निर्देश दिये होते है | पटकथा लेखक का शब्द भांडार समृध्द होना अनिवार्य होता है | पटकथा कीसी भी घटना या दृश्य पर लिखि जाती है | पटकथा के लिए सबसे महत्व पुर्ण नाटकीयता होती है | नाटकीयतासे कथावस्तु को पटकथा के शिल्प में डालना पडता है जिससे पटकथा आकर्षक होती है, और उसे को गति आति है | आकर्षक पटकथा ही सफल होती है और उस पटकथा को कई फिल्म निर्माता खरीदना चाहते है | और इसी से तो आज कई हिंदी छात्र घर बैठकर पटकथा लेखन करके रोजगार प्राप्त कर सकते हैं |

फिल्म की पटकथा लिखते समय स्थल काल अनुसार पात्रों का परिचय आवश्यक है तद्उपरांत दो विरुध्द विचार,घटना में किसी बात पर संघर्ष करते कथानक को आगे बढना चाहिए इस के उपरांत फिल्म की कथा को चरम अवस्था में लाकर सामने वाले को आनंद देना चाहिए | फिल्म की पटकथा लिखते समय शुरुवात और अंत महत्वपुर्ण होते है | क्योंकि इन दोनो के बिच ही पूरी कथा घूमती रहती है अगर दोनों में मेल जोल नहीं तो वह पटकथा व्दारा निर्मित फिल्म सफल नहीं हो सकती वर्तमान मे विश्व की हर भाषाओं में, हर क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता बढ रही है | कला, धर्म, साहित्य, दर्शन, शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान,तकनीक, वाणिज्य, राजनीति, व्यापार, समाजशास्त्र आदि अनेको शाखाओं मे होनेवाले कार्य, संशोधन एवं गतिविधीयाँ एक राष्ट्र से दुसरे राष्ट्र में, एक संस्कृति से दुसरे संस्कृति मे पहूचाने का कार्य अनुवाद के व्दारा हो रहा है | आज अनुवाद समाज के प्रत्येक घटक की आवश्यकता बन गया है |

किसी भी समाज की संस्कृति एवं सभ्यता का परिचय एवं अदान-प्रदान, तुलनात्मक अध्ययन, अनुवाद के माध्यम से भाषा और साहित्य को समृध्द करना, राष्ट्रीय एकात्मता को बढाना, विश्वग्राम संकल्पना को आत्मसता

करना, आंतरराष्ट्री सद्भाव एवं मानवता को वृध्दीगंत करना, राष्ट्र विकास हेतू तंत्रज्ञान एवं विज्ञान का अदान-प्रदान करना, वैश्विक मूल्यों को स्थापित करना, व्यवसाय एवं व्यापार में सहायता निर्माण करना, संशोधन को बढावा देना आदि अनेकों क्षेत्रों में अनुवाद एवं अनुवादक को महत्वपुर्ण भुमिका अदा करनी पडती है | अनुवाद के इस युग में अनुवादक की माँग बढ रही है | अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की अनेको संभावनाए बढ गई है | बँक में निरिक्षण अधिकारी, बीमा क्षेत्र में जनसंपर्क अधिकारी, बँको में राजभाषा अधिकारी, केंद्रिय कार्यालय में मुख्य राजभाषा अधिकारी, केंद्रिय कार्यालय में मुख्य राजभाषा अधिकारी, आकशवाणी,दुरदर्शन, सिनेमा, समाचारपत्र संपादक, टेलिफोन,वाणिज्य क्षेत्र, सुत्रसंचलन,कृषि क्षेत्र, पर्यटन क्षेत्र, क्रिडा समालोचन, विविध धारावाहिक लेखन, संवादलेखन, कोष निर्माण क्षेत्र, विज्ञापन क्षेत्र साहित्यिक क्षेत्र, पर्यटक मार्गदर्शक, सरकारी गैर सरकारी कार्यालय, एम.पी.एस.सी., यु.पी.एस.सी., विज्ञापन आदि क्षेत्र में अनुवाद के कारण रोजगार की सँभावनाए बढ रही है | अनुवाद क्षेत्र में रोजगार के अनेकों महत्वपुर्ण अवसर दिखाई देते है |

विज्ञापन अनुवाद के क्षेत्र में भी रोजगार की सभावनाएँ बढ रही है | विज्ञापन का क्षेत्र अत्यंत्य विस्तृत एवं व्यापक होने के कारण वैश्वीकरण नें व्यापार के दरवाजे खुल हो गार, जिस कारण विज्ञापन लेखन व विज्ञापन अनुवाद की माँग बढ गई | विश्व की अनेकों भाषाओं के विज्ञापन भारतीय भाषाओं में अनुवादित होने लगे| अनेंको अंग्रेजी भाषा के विज्ञापन को एजन्सीज व्दारा अनुवादित किया जाता हैं |

Neighbour's envy,owner's pride पडोसियाँ की जले जान, आपकी बढे शान (ओनिडा टी.वी.) who's afraaid of birth days उम्र से क्या घबराना (पोडस क्रीम), incredible India अतुल्य भारत (भारतीय पर्यटन विभाग), With You For You always सदैव आपके लिए आपके साथ (दिल्ली पुलिस)

विज्ञापन संस्थाओ में मूल रुप से अंग्रेजी में विज्ञापन बनाऐ जाते है | भारत में अनेकों बहुराष्ट्रीय कंपनी के उत्पाद का विज्ञापन पहले अंग्रेजी में बनता है तथा बाद में उसका हिंदी अनुवाद किया जाता है | बडी कंपनियाँ प्राय: प्रथमत: अपनी विज्ञापन सामग्री अंग्रेजी में ही तैयार करती हैं फिर उनका अनुवाद भारतीय भाषाओं मं कराती है|

वर्तमान स्पर्धा, बाजारीकरण एवं भूमंडलीकरण के दौर में रोजगार मूलक अध्ययन की नितांत आवश्यकता हैं | शिक्षा में आधुनिकता, नवीनता, उपयोगीता एवं व्यापकता हि रोजगार की संभावनाओं में वृध्दी कर सकती हैं | हिन्दी भाषा के साथ साथ अन्य भारतीय भाषा एवं विदेशी भाषा को आत्मसात करना भी समय की माँग है | आज प्रयोजनमूलक हिन्दी के अधुनातन आयामों के कारण हिन्दी अध्येताओं के लिए, रोजगार के, अनेकों क्षेत्र खुले हैं | पत्रकारिता, विज्ञापन लेखन, अनुवाद, समाचार लेखन, नवपत्रकारिता, सिनेमा, पटकथा लेखन, फिचरलेखन, जनसंचार माध्यम, संवादलेखन, गीत लेखन, मुद्रण आदि अनेकों क्षेत्र के साथ - साथ केंद्र सरकार से संबधित कार्यालयों में नौकरी की अनंत संभावनाएँ हैं | अध्यापन, संशोधन, पर्यटन, स्पर्धा परीक्षा, जनसंपर्क अधिकारी, राजभाषा अधिकारी, संवाददाता हिदी निर्देशक, राष्ट्रीयकृत बँको में, प्रूफरीडर, उदघोषक, सेवाक्षेत्र, संचारक्षेत्र आदि हिंदी से संबंधित अनेको रोजगार हैं | हिन्दी नई पत्रकारिता नें भी रोजगार निर्माण को बढावा दिया हैं | नेट वेबसाईट वीडियो, मॅग्जीनों, चित्र अनुवर्तन, खोज, फोटो, कार्टुन, ग्राफिक्स साक्षात्कार, स्टिंग ऑपरेशन, संचार माध्यम पत्रकारिता, आदि अनेकों क्षेत्र भी रोजगार के लिए खुल गए हैं |

संदर्भ संकेत

1) प्रयोजन मूलक हिंदी के अधुनातम आयाम- डॉ.अंबादास देशमुख
2) फिचर लेखन स्वरुप और शिल्प-डॉ. मनोहर प्रभाकर
3) अनुवाद पुन: निरीक्षण एवं मुल्यांकन - डॉ. पुनरचंद टंडन
4) प्रयोजनमूलक हिंन्दी : सिध्दांत और प्रयोग - दंगल झाल्टे
5) प्रयोजनमूलक हिंन्दी - विनोद गोदरे
6) हिंदी अनुवाद एवं भाषिक संरचना : डॉ. शकुंतला पांचाळ
7) व्यावहारिक अनुवाद - विश्वनाथ अय्यर
8) प्रयोजन मूलक हिंदी अवधारणा और अनुवाद -गोवर्धन ठाकूर
9) हिंदी पत्रकारिता सिध्दान्त और स्वरुप - सविता
10) पटकथा लेखन एक परिचय -मनोहर श्याम जोशी
11) पटकथा कैसे लिखे - राजेंद्र पांडे